वाणी मंथन

"ए चरण दिल का जीवन है"

जिस प्रकार से जीव के बिना शरीर का अपना कोई अस्तित्व नहीं है, बिना जीव (प्राण) के शरीर एक मिट्टी के पुतले के समान है, जैसे ही शरीर से जीव अलग होता है, शरीर के सब अंग साथ होते हुए भी मिट्टी हैं, जीव के निकलते ही शरीर को जला दिया जाता है या दफना दिया जाता है।

इसी प्रकार परमधाम की आत्माएं जिनके प्राण (जीव) श्री राज जी महाराज के चरण हैं, श्री राज जी के बिना रुहों का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। रुहों का अपने धनी से ऐसा ही सम्बन्ध है।

आसिक इन चरण की, आसिक की रूह चरण।
ए जुदागी क्यों सहे, रूह बिना अपने तन।।

रुहें श्री राज जी के बिना, एक पल भी नहीं रह सकतीं क्योंकि वह श्री राज जी महाराज के ही तन हैं। जैसा कि वाणी में भी फुरमाया है कि रुहों तुम मेरे तन हो, जैसे सूरज और सूरज की किरणें, सागर और सागर की लहरें एक दूसरे से जुदा नहीं हो सकतीं इसी तरह श्री राज जी अपनी रुहों से एक पल भी जुदा नहीं हो सकते। इसी सम्बन्ध के वास्ते ही स्वंय इस खेल में उतरे और अपने ही तन रुहें जो श्री राज जी के हुकम से इस खेल में उतरी हैं, उन नासूती तनों के दिल को श्री राज जी महाराज नें अपना अर्स किया। रुहें इस माया में आकर अपने आप को भूल गईं पर जैसे ही धनी की मेहर की नज़र रुह पर पड़ी और श्री राज जी महाराज ने स्वंय अपनी पहचान करवाई तो जो रुहें मूल-मिलावे में श्री राज जी महाराज के चरणों तले बैठी हैं, उन रुहों के जीव के जीवन स्वंय श्री राज जी महाराज है जैसा कि फुरमाया है

ए चरण दिल के जीव हैं, तिन बिन जीव क्यों जीवत।
तो हके कहया अर्स दिल की, जाकी असल हक निसबत।।

जिन्हें वाणी से अपने धनी की पहचान हो गई वह फिर खेल में एक पल के लिए भी अपने धनी को नहीं भूलतीं।

उमर जात प्यारी सुपने, निस दिन पिऊ जपत।
लाँक कदम न छोड़े मोमिन, जाकी असल हक निसबत।।

ऐसे मोमिन तो -

Nijanand App

पाऊं निसदिन न छोड़े मोमिन, सुपने या सोवत।
सो क्यों छोड़े बेसक जागे, जाकी असल हक निसबत।।

जिनको श्री राज जी महाराज ने अपने मेहर से अपनी पहचान करवा दी है वो अपने धनी को पाने के लिए खेल में कुरबानियाँ करेंगे अर्थात धनी को पाने के लिए कितनी भी कठिनाईयाँ आयें, उन सबकी परवाह किये बिना अपने धनी के रास्ते पर स्वंय को कुर्बान कर देगे तभी तो वह धनी के आसिक कहलाने के हकदार हैं :-

करे सुपने में कुरबानियाँ, ऐसे मोमिन अलमस्त।
सुते भी कदम न छोड़िए, जाकी असल हक निसबत।।

ऐसे मोमिन जो अपने धनी पर फना हैं, धनी भी उन पर फिदा है। यहीं बैठे श्री राज जी महाराज परमधाम के सब सुख देते है। पहचान होने पर धनी की मेहर से रूह फिर

ले चरण दिल अर्स में, सब गलियों में फिरत।
सब सुध होवे अर्स की, जाकी असल हक निसबत।।

जिसको वाणी से यह पता चल गया कि ये घर मेरा नही, मेरा घर परमधाम है, धनी का स्वाद लग गया हो तो अपने परमधाम के ज़र्रे-ज़र्रे को मोमिन सुरता से परमधाम की बारीक गलियों की एक पल के लिए नहीं भूलेंगें। सुरता से परमधाम में ही विचरण करेंगे। पच्चीस पक्षों के सुख यहीं बैठे लेंगी। निसबत के कारण ही वह परमधाम की रहने वाली हैं। सब सुखों को लेने वाली हैं। उन्हीं को धनी इश्क की सुराही का स्वाद देंगे।

खेलने वाली सातों घाट की, हक प्रेम सुराही पिलावत।
इन्हे सुपने न छोड़े कदम को, जाकी असल हक निसबत।।

ऐसे रुह मोमिन जो हक की सुराही में रस में अर्थात सुपने के ब्रह्माण्ड में उनकी मस्ती में रहते हैं। जिनके दिल में श्री राज जी के चरण हैं। जिन्हें चरण मिल गये तो उससे बड़ा सुख कोई नहीं है।

तिन भाग में क्या कहूँ, जिन दिल ए कदम बसत।
धन-धन कदम, धन ए दिल, जाकी असल हक निसबत।।

वाणी में कहा है कि ऐसे मोमिन जिनके दिल में श्री राज जी महाराज के चरण बसते हैं उनकी चरणरज पर करोड़ों मलकूत यानि बैकुण्ठ के राज भी वार दें तो भी कम हैं। जो सुख ब्रह्मसृष्टियों को है वह किसी को भी नहीं है।

Nijanand App

कै मलकूत वारों तिन खाक पर, जिन दिल एक कदम बसत।
और दिल अर्स न हो वहीं, बिना असल हक निसबत।।

कितनी भी कसनी क्यों न कर लो, जप, तप, ध्यान कर लो, बिना निसबत के यह चरण प्राप्त नहीं हो सकते। वाणी में भी लिखा है -

कदी सौ बरस रहे साथ में, धनी अनुभव सौ बेर।
मूल अंकूर दया बिना, ले करमे डाले अन्धेर।।

सुन्दरसाथ जी बिना निसबत यह चरण मिलते नहीं, यहीं कारण है कि राज जी महाराज के दिल के गुझ भेदों को ब्रह्मसृष्टि के सिवा कोई नहीं जानता

एक कदम पावें रूहें अर्स की, नहीं औरों की किस्मत।
ए सोई पावे अर्स बारीकियां, जाकी असल हक निसबत।।

मोमिनों की यही पहचान है कि वाणी द्वारा उन्हें अपनी पहचान होगी तुरन्त माया की झूठी शान-मान-मर्यादा को छोड़कर, परमधाम के इश्क को लेकर धनी के चरणों को प्राप्त करेगी।

जो रूहें कही लाहुती, इजने इत उतरत।
सो पकडे कदम इश्क सो, जाकी असल हक निसबत।

फिर वह किसी भी जाति में हो, देश में हो या परदेस में जैसे ही अपने धनी का आना सुनेगी पल में सब कुछ छोड़कर अपने धनी के चरणों को ही पकड़ लेगी।

रूह होवे जिन किन खिलके, हक प्रगटे सुनत।
सो आए पकड़े कदम पल में, जाकी असल हक निसबत।।

इस पहचान से कि हम श्री राज जी के तन और श्यामा जी के अंग है। इस सन्मन्ध से वाणी की कसौटी पर स्वंय को परखें कि वाणी के बाण हमें चुभ रहे ? वाणीं में हमारे ही घर की बातें है। क्या हमें याद आती है, हमे श्री राज जी महाराज के विरह का दर्द लगा है? अगर हमें अपने धनी अपने निजधर का नहीं बल्कि माया का ही दर्द है तो निश्चय ही हमें बार-बार विचारना है। आत्म मन्थन करना है। श्री राज जी महाराज ने हमें इतना खजाना, इतनी न्यामतें दी हैं फिर हमें उस सम्बन्ध का दर्द क्यों नहीं आ रहा है। सुन्दरसाथ जी बार-बार आत्म-मन्थन करने से ही हमारे सन्मंध का सुख हमें मिलेगा क्योंकि धनी के यह सुख तो हमारे लिए ही हैं। धनी हमें अपने घर ले जाने के लिये आये तो श्री राज जी महाराज के चरणों को अपने चित में बिठाकर मूल-मिलावे में जहाँ श्री राज जी के चरणों तले हम सब बैठे हैं, जाग्रत हो जाएं।

श्री महामत कहे अरवा अर्स से, जो कोई आई हो उतर।
सो इन स्वरूप के चरण लेय के, चलिए अपने घर।।

चरणरज, श्रीमती कंचन आहूजा (जयपुर)

Nijanand App